ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

वेद और इस्लाम धर्म के प्रकाश में मानवता का उद्देश्य

Aim of Humanity in The Light of Ved and Islam Religion

Paper Submission: 10/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

नसीम फातिमा
पूर्व प्रवक्ता,
दर्शन शास्त्र विभाग,
हनमंतु महाविद्यालय लाहुरपुर,
हनमानु गंज, इलाहाबाद, उतर प्रदेश, भारत

सारांश

सृष्टि होने के पूर्व मात्र एक ही सत् विद्यमान था उसी सत् स्वरूप प्रधान प्रकृति से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुयी। ईश्वरीय ज्ञान कभी विपरीत नहीं होता उसने अपने अनन्त सामर्थ्य एवं ज्ञान से जगत को रचा है। इसलिये सभी मनुष्यों के लिये उचित है कि मन, कर्म, वचन से पाप कर्मो को कभी न करें। सभी प्रकार के पक्षपात छोड़ कर प्रेम की प्रत्येक बूँद मानव जाति पर गिरा दे तथा वैदिक तथा इस्लाम धर्म के प्रकाश में ईश्वरीय आदेश का पालन करना चाहिये जो श्रुतियों पर आधारित है जिसके पालन से हमें कभी भी किसी भी प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्यायें उत्पन्न नहीं होगी और हम अपने उददेश्य की प्राप्त कर सकेगें।

Before the creation, there was only one truth, and the same sattva-dominated nature created the creation. Divine knowledge is never contrary. He has created the world with his infinite power and knowledge. That is why it is appropriate for all human beings to never commit sinful deeds through mind, deed, and word. Leaving all forms of prejudice, every drop of love should fall on mankind and in the light of Vedic and Islam religions should obey the divine order which is based on the Shrutis, by which we will never have any kind of religious, social, political etc. Problems will not arise and we will be able to achieve our objective.

मुख्य शब्द : सृष्टि, कल्प, ऋतंभरा-प्रज्ञा, एकेश्वरवाद, सत्व, रज, तम ।

प्रस्तावना

सृष्टि होने के पूर्व मात्र एक ही सत् विद्यमान था, उसी सत् स्वरूप प्रधान प्रकृति से ही यह नाना सृष्टि रचित हुई है और वह ईश्वर प्रत्येक कल्प में जैसी सृष्टि रच चुका है वैसी ही सृष्टि रची है और इसके बाद पुनः भी ऐसी ही सृष्टि रचेगा। क्योंकि ईश्वर के कार्य में किंचित मात्र भी परिवर्तन नहीं होता है।

ऋग्वेद में मंत्र आता है–

ओउम ऋत च सत्य चाभीद्धात्त्पसोऽध्याजायत ।
ततो रात्रयजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहारात्राणि विदधद्विश्रस्य मिषतो वशी।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत।
दिवं च प्रथवी चान्तीरिथामथों स्वः।।

ऋग्वेद–1, 2, 3

ईश्वर जो कि सृष्टि निर्माता, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान है, ने सृष्टि की रचना की और पुण्य–पाप के आधार पर जीवों की काया का निर्माण किया।

जैसे पूर्णकल्प में सूय चन्द्र लोक रचे थे, वैसे इस कल्प में भी रचा है, जैसी प्रत्यथा दिखती है जैसा पृथ्वी और सूर्य लोक के बीच पोलापन है जितने आकाश के बीच लोक हैं उनको ईश्वर ने रचा है।

जैसे अनादिकाल से लोक–लोकान्तर को जगदीश्वर बनाया करता है, वैसा ही वह आगे भी बनायेगा, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान कभी–विपरीत नहीं होता किन्तु पूर्ण और अनन्त होने के कारण सदा एक रस ही रहता है।

इसके कार्य में वृद्धि, क्षय, उल्टापन कभी नहीं होता इसी कारण से– 'यथापूर्वम कल्पयत् इस पद को गृहण किया है।

ईश्वर ने अपने परम ज्ञान व सामर्थ्य से दिन रात की रचना की जो कि संदेह से परे है, जो कि ईश्वर के प्रकाश से जगत का कारण प्रकाशित और जगत के बनाने की सामग्री ईश्वर के अधीन है उसी अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या का खजाना वेदशास्त्र को प्रकाशित किया, जैसे पूर्व में किया था और आगे कल्पों में भी इसी प्रकार अपने ज्ञान का प्रकाश करेगा।

जो त्रिगुणात्मक अर्थात, सत्व, रज, तमागुण से युक्त है जिसके नाम अव्यक्त सत् प्रधान प्रकृति है, जो स्थूल और सूक्ष्म जगत का कारण है।

वेद से लेकर पृथ्वी पर्यन्त जो यह जगत है सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके, सब में व्यापक हो के अन्तर्यामी रूप से सब के पाप–पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़ कर सत्य न्याय से सबको यथावत फल दे रहा है।

ऐसा निश्चित जानकर ईश्वर से भय करके सब मनुस्यों को उचित है कि मन, कर्म और वचन से पाप कर्मो को कभी न करें इसी का नाम अधर्मषण है अर्थात ईश्वर अन्तः करण के कर्मो को देख रहा है, इससे पाप कर्मो का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवे।

सृष्टि रचने के बाद परमात्मा ने जीवों के उत्थान के लिये वेदो का ज्ञान प्रदान किया ये सर्वप्रथम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के गेह में प्रकट किया इन ऋषियों ने सृष्टि के सभी मनुष्यों को सुनाया जिसको सुनकर सभी मनुष्य को कल्याण की प्राप्ति हुई।

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ईश्वर जीव और सृष्टि रचना में लिखते है कि जब सृष्टि हुई उसमें सभी शरीर धारी प्राणी तथा मनुष्य सभी युवा–युवा ही उत्पन्न हुए और इनकी उत्पत्ति त्रिब्टिप अर्थात तिब्बत में हुयी और वहीं से मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ हुआ क्योंकि ऋग्वेद में आया है कि इस सृष्टि का निर्माण हिरन्य गर्भ से हुआ है, समय आने पर यह सारी सृष्टि उसी गर्भ में सिमट जाती है और फिर समय बीतने के साथ इसी गर्भ से प्रस्फुटित हो जाती है।

इन मनुष्यों को ज्ञान प्रदान करने के लिये मोक्षस्था आत्माये आयी जिनका जन्म सांकल्पिक हुआ। क्योंकि परमात्मा ने जीवों के कल्याणार्थ सांकल्पिक सृष्टि का निर्माण किया है उनका जन्म होना और यह संकल्प होना कि मात्र सभी मनुष्यों को ज्ञान प्रदान करके कर्म करने की प्रेरणा देना जिससे हर प्रकार का सुख प्राप्त हो, क्योंकि मोक्ष उसी पुरूष को प्राप्त होता है जिसकी वृत्तियां रूक गयी है और ऋतम्भरा– प्रज्ञा वुद्धि का विकास हो कर सारे संस्कार समाप्त हो गये हो।

सतोगुण प्रधान वाले पुरूष को ही मोक्ष प्राप्त होता है और मोक्ष में पुरूष 33000/– कल्पों तक रहता है तो वे ही आत्माये आती है।

इस सृष्टि में ज्ञान प्रदान करने के लिये वे सर्वप्रथम अग्नि, वायु आदित्य और अंगिरा ऋषियों का जन्म अन्य जीवों के साथ होना संकल्पित था इन्हीं के गृह में ईश्वर ने विदित कराया और इन्होने वैसा ही सुनाया।

जब कभी मन शान्त होता है तो वृद्धि में क्रोध, स्वार्थ, लालच नहीं होता है। तब हमने जो किया उसके करने से लाभ मिलता है तभी स्वमेव एक विचार उत्पन्न होता है कि यह ज्ञान जो हमारे मन में उत्पन्न हो रहा है वह सभी को बता दें जिससे दूसरे को भी लाभ मिल सकें।

इस प्रकार का विचार उत्पन्न होना ही वेदो का ज्ञान है–

ऐसा विचार मात्र हिन्दु ही न समझे कि मेरे अन्दर ही उत्पन्न होगा अपितु ऐसा विचार विश्व के किसी भी मनुष्य के अन्दर उत्पन्न हो सकता है जिसका मन शान्त बुद्धि निर्मल है, किसी कर्महीन, पाखण्ड, स्वार्थी मनुष्य के अन्दर यह कदापि उत्पन्न नहीं हो सकता।

वेदो का प्रत्येक मंत्र यह कहता है कि करो और पाओ,

मंत्र का अर्थ है कि– त्रयी विद्या से विचार लेना।

विचार करना दृस्ढ संकल्प बनाना, अच्छे विचार अच्छा ही फल प्रदान करने वाले होते है। और खोटे विचार मानव को खोटे ही बनाते है। अतः इनके खोटे कर्म के ही कारण उन्हें दुख प्रदान होता है।

जो व्यक्ति वेदो के विपरीत धर्म करता है वह अन्त में आता तो वेदो पर ही है, इस विश्व का जितना भी ज्ञान है वह सारा का सारा वेदो से उत्पन्न हुआ है।

इसलिए जब तिब्बत में अमैथुनी सृष्टि से मैथुनी सृष्टि प्रारम्भ हुयी बढ़ने वाली शाखायें मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त करके इस आर्यवर्त के कोने–कोने में जाकर निवास करने लगी और यहां पर मनु महाराज की नीति में शाम, दाम, दण्ड, भेद लागू हुआ तो जो नियम के विपरीत कर्म करते थे तो उनका भेदन करके देश निस्कासित का दण्ड देकर बाहर किया गया, वे ही असुरी प्रवृत्तियां इस भूतल के अन्य देशो में जाकर बसने लगी। इस प्रकार मानव जाति का प्रसार हुआ वे कर्म करके ज्ञान प्राप्त करते है और यहां ज्ञान प्राप्त करके कर्म किये जाते हैं जिससे हर प्रकार की सफलता अति शीघ्र प्राप्त होती है।

अतः इसके विपरीत कर्म करने अर्थात वेदों के विपरीत कार्य करने से अनेक प्रकार की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

वैदिक धर्म की समस्या

वेदो का प्रत्येक मंत्र यह कहता है कि 'करो या पाओ' मंत्र का अर्थ है नयी विद्या से विचार लेना,

विचार करना, दृढ़ संकल्प बनाना, अच्छे विचार अच्छा फल देने वाले ही होते है और बुरे विचार बुरा फल देने वाले होते है।

वैदिक धर्म के अनुसार जो व्यक्ति वेदो के विपरीत कर्म करता है अंत में आता तो वेदो पर ही है इस विश्व का जितना भी ज्ञान है वह सारा का सारा वेदो से ही उत्पन्न हुआ है। वैज्ञानिक, शारीरिक, भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, चिकित्सकीय, यौगिक, खगोलीय, भौगोलीय, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक इत्यादि वेदो का ही ज्ञान हैं। इस संसार की जितनी भी पुस्तके हैं, गृन्थ है चाहे वह छोटे या बडे स्तर की हो या धार्मिक ग्रन्थ सभी में वेदो का सार अवश्य मिलता है। जब मनुष्यों की बढ़ने वाली शाखाये ज्ञान प्राप्त करके इस आर्यवर्त के कोने–कोने में निवास करने लगे और यहां पर मनु महाराज की नीति में शाम, दाम, दण्ड, भेद लागू हुआ तो जो लोग नियम के विपरीत कर्म करते थे उनका भेदन करके देश निष्कासित का दण्ड देकर बाहर किया गया।

वे ही आसुरी प्रवृत्तियां इस भूतल के अन्य देशों में जाकर बसने लगी, इस प्रसार सम्पूर्ण वसुधा पर मानव जाति का प्रसार हुआ वे कर्म करके ज्ञान प्राप्त करते हैं और यहीं ज्ञान प्राप्त करके कर्म किये जाते हैं जिससे हर प्रकार की सफलता अतिशीघ्र प्राप्त होती है।

उदाहरण

राम राज्य के विषय में यदि देखा जाये तो राम राज्य का समय लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व हुआ, उस समय इस अवध प्रान्त में वेदो की ही शिक्षा थी, उसी आधार पर राज्य शासन के नियम बनते थे। राजा और प्रजा का सम्बन्ध पिता और पुत्र की भांति होता था।

उस समय ऐसे संस्कार दिये जाते थे कि व्यक्ति अपने कर्तव्यों से कर्तव्यच्युत नहीं होता था। तब राम के राज्य में सारी प्रजा सुखी एवं खुशहाल रहती थी।

दूसरी ओर रावण राज्य की यदि बात करें तो सबसे पहले रावण शब्द का अर्थ समझना होगा।

रावण शब्द का अर्थ बहूत ही अच्छा है जो राम के शब्द से भी अपने नाम के अर्थ का महत्व रखता है। ऐसा व्यक्ति जो चारो वेदों तथा छः शास्त्रों का ज्ञाता होकर दशों दिशाओं की जानकारी रखता हो और अपनी शारीरिक क्षमता के आधार पर सारे भुवनो पर राज्य करता हो, ऐसा व्यक्ति बहुत ही प्रतापी और विद्धान शासक होता है। लेकिन रावण में आसुरी प्रवृत्ति जागृत हुयी जिसके कारण ही उसके नाम का अनर्थ हो गया, इन आसूरी प्रवृतियों को रोकना ही देवत्व की श्रेणी में ले जाता जो कि श्रीराम ने किया जिसके कारण आज भी संसार राम–राज्य की ही कल्पना करता है।

इस प्रकार की आसुरी प्रवृत्तियां उत्पन्न होने से ही धर्म की समस्यायें उत्पन्न होने लगती है। यहां आवश्यकता इस बात की है कि लोग धर्म को समस्या बनाये बैठे है, जबकि वास्तविकता यह है कि धर्म समस्या नहीं बल्कि समाधान है।

इसी प्रकार इस्लाम धर्म की यदि चर्चा करें तो इसका प्रारब्ध उददेश्य बहुत ही व्यापक व सार्वभौमिक रहा है इसकी पूरी की पूरी पद्धति वेदो के ही आधार पर है। इसमें भी ऐकश्वरवाद की स्थापना और मूर्ति पूजा का खण्डन है। वह भी सर्वे भवन्तु सुखिनः का सदेश देता है। इसके पश्चात इस्लाम धर्म में भी कुछ समस्यायें उत्पन्न हो गयी।

इस्लाम धर्म की समस्यायें

सबसे पहले इस्लाम धर्म का अर्थ समझ लेना आवश्यक है, क्योंकि आज विडम्बना इस बात की है कि इसके अर्थ का ही अनर्थ कुछ स्वार्थी और अज्ञानी मनुष्यों ने अपनी झूठी दिखावट और लालच में कर दिया है जिसके कारण आज पूरे विश्व में इस्लाम धर्म को घणा की दृष्टि से देखा जाता है।

इस्लाम धर्म का अर्थ

इस्लाम धर्म का अर्थ है जो सलामत रहे या जो अस्तित्व में रहे– अर्थात ऐसा धर्म जो हमे सीधी राह पर चलाये वह सीधी राह जो सदा बनी रहे जिसका अस्तित्व सदा के लिये हो। मात्र इसी सीधी राज का पालन कराने के लिये इस्लाम धर्म के पैंगम्बर 'हजरत मोहम्मद सल्ल0 अर्लेह वस्सलम' ने अपना पूरा जीवन बलिदान कर दिया।

उनका उद्देश्य पूरे विश्व के लिये सलामती का रास्ता बताना था न कि केवल इस्लाम धर्म के लिये। क्योंकि कोई भी धर्म चाहे वह वैदिक हो, ईसाई हो, यहूदी हो या अन्य वह कभी किसी समूह विशेष के लिये अवतरित नहीं होता हर धर्म का उददेश्य पूरे मानव जाति के कल्याण के लिये होता है, कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता है कि कोई धर्म या इस्लाम धर्म केवल मुस्लिमो के लिये ही है, क्योंकि जब इस सृष्टि का रचयिता एक है , ब्राम्हाण को बनाने वाला एक है , उद्देश्य सभी का एक है तो धर्म अनेक कैसे हो सकते हैं?

सभी धर्मो का अर्थ सत्य मार्ग पर चलते हुये अपने कर्मो को पूरा करना है। इस्लाम धर्म को समझाने अथवा पालन कराने के लिये पैगम्बर मोहम्मद सल्ल0वसल्लभ ने भरसक प्रयास किये क्योंकि वह अज्ञानियो के बीच में जन्में थे, उन्होने उनके अज्ञान को समाप्त करके उनको सही तथा गलत में अन्तर बताया, उन्होने अपने स्वयं के कर्मो से मानवता का जीवन किस प्रकार यापन किया जाता है यह उन्होने स्वयं करके बताया। इस्लाम में हिसंक बनने या हिंसा करने को कभी भी नहीं कहा गया परन्तु कुछ अज्ञानी लोगों ने इसका वास्तविक स्वरूप ही बदल दिया है। आज जितनी भी धार्मिक पुस्तके है उनके उपदेशों को व्यक्ति सुनता तो हैं परन्तु उनको आत्मसात नहीं करता यही कारण है कि हमारी मानसिकता अलगाव चाहती हैं। जब धर्म के अन्दर रूढिवादी परम्परा और अंहकार समाप्त हो जाता है तो उसका रूप बदल जाता है।

मो0 सल्ल0 ने अरब के जाहिल लोगों को सभ्य व शिष्ट बनाने के लिये उस एक ईश्वर में विश्वास करने की बात कहीं और कहा कि प्रत्येक दशा में उसका आदेश मानो और वैसा ही आचरण करो जो मानवता का उद्देश्य है तभी तुम मुसलमान कहलाने योग्य बनोगे। हमारे इस शोध का उद्देश्य सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड को न्याय के साथ एक वसुधा में पिरो देना है। जिससे प्रत्येक क्षण प्रेम, निस्वार्थ कर्म निष्ठा से परिपूर्ण हो ।

जब हम न्यायपूर्ण ढंग से निस्वार्थ भाव से अपना कर्म करेगें तो पूरे समाज में कभी भी किसी भी प्रकार का वैमन्सय नहीं रहेगा कोई समस्या नहीं रहेगी।

अतः इस मानवीय प्रेम की बूंद इस संसार में निवा करने वाली प्रत्येक मनुष्य जाति के ऊपर गिरा दो, यह पक्षपात छोड कर कि यह हिन्दु है या मुस्लमान सिख या ईसाई, यहूदी है या पारसी। उस जल की वर्षा के समान, उस वायु के समान, उस सूर्य और चन्द्र के प्रकाश के समान उस बर्फ से ढकी पवर्तीय श्रंखलाओं के समान अपनत्व की भावना को जागृत करो, तभी हम सच्च अर्थो में इंसान या मुस्लमान कहला पायेगें। सच्चे मनुष्य बन पायेगें। नही तो ऐसे ही हम अज्ञानता का जीवन यापन करके इस संसार से अर्थहीन जीवन को पूर्ण करके चले जायेगे जिसका चक्र सदा चलता ही रहेगा और हम कभी भी मुक्त नहीं हो पायेगें।

अध्ययन का उददेश्य

इस विषय पर हमारा उददेश्य मात्र इतना ही है कि जो मार्ग हमें ईश्वर द्वारा बताये गये है उन पर हम पूरी तरह से चले, हर प्रकार का भेद–भाव छोड़ कर, पक्षपात छोड़ कर मानवीय प्रेम की बूंद इस संसार पर गिरा दे जो जल की वर्षो के समान, उस वायु के समान, उस सूर्य और चन्द्र के प्रकाश के समान, बर्फ से ढकी पर्वतीय श्रृंखला के समान अपनत्व की भावना जागृत करें ताकि हमारी आने वाली पीड़ी हिन्दू, मुस्लमान नहीं अपितु मात्र इन्सान बन सकें।

निष्कर्ष

इस संसार में जितनी भी धार्मिक पुस्तके है जो श्रुतियों पर आधारित है वह सत्य हैं क्योंकि वह ईश्वरीय संदेश है। ये ग्रन्थ चाहे किसी भी भाषा में अथवा स्थान पर अवतरित हुये हो परन्तु इन सभी का उददेश्य एक ही है कि हमें असुरी प्रवृत्ति को छोड़ कर ईश्वर द्वारा बताये गये सत्य और कर्मयुक्त मार्ग पर चलना चाहिये जिससे सार्वभौम विकास हो सके। यदि हम इन श्रुतियों पर चले तो जीवन में किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उपनिषद*
2. *मनुस्मृति*
3. *इस्लाम क्या है?–मौलाना मंजूर।*
4. *भारतीय दर्शन–आचार्य बलदेव उपाध्याय*
5. *कर्म योग–श्री अरविन्द*
6. *आधुनिक संदर्भ में धर्म– डा0 रामनाथ शर्मा*
7. *गीता रहस्य– बाल गंगाधर तिलक*
8. *सत्यार्थ प्रकाश–स्वामी दयानन्द सरस्वती*
9. *ब्रह्मसूत्र–शंकर भास्य*
10. *श्रीमद्भागवत–महापुराण*